

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ

Shree
Atmanand
Prakash

શ્રી
આત્માનંદ
પ્રકાશ



ॐ દ્વિપાવલીનો શુભ સંદેશ ॐ

તત્પવિત્રચરિત્રાનુસ્મરણેન વલીયસા ।
સર્વદૈવ વયં સ્થામ મનઃશુદ્ધીક્રિયાપરા ॥

ભગવાનના પવિત્ર ચરિત્રાનુસ્મરણેન રાખીને એ દ્વારા
આપણે આપણી મનશુદ્ધિની સાધનામાં હુમેશાં ઉધ્યત રહેવાનું છે....

Through the powerful remembrance of His purest life we are
to be always devoted to attempt for purifying our mind.

પુસ્તક : ૬૨

ॐ

અંક : ૧૧-૧૨

ભાદ્રવેદ-યાસો

ॐ

સપ્તે.-ઓક્ટે. : ૬૫

આત્મ સંવત : ૬૬

વીર સંવત : ૨૫૨૧

વિક્રમ સંવત : ૨૦૫૧

અનુકૂળગતિશી

ક્રમ	લેખ	લેખક	પૃષ્ઠ
(૧)	નવા વર્ષ માટે પ્રાર્થના.... (કાય)	ઉપા. હેમચંદ્રસાગરણ : પાટણ	૧૧
(૨)	આત્મા બન્ધો પરમાત્મા	અનુ. : ડૉ. કુમારપાણ હેસાઈ	૧૨
(૩)	ક્રમંરાજની કરામત (અંક ૭-૮ થી ચાહુ)	સંકલન : ખાન્તીલાલ આર. સલોત	૧૫
(૪)	હાદાસાહેણ-ભાવનગર મધ્યે ચાતુર્માસની એક જલક	૧૭
(૫)	ગોડિલ ઉપાશ્રય-ભાવનગર અવિસમરણીય ચાતુર્માસ	૧૮
(૬)	હિન્દી વિભાગ
(૭)	શ્રી જૈન આત્માનંદ સભાના શતાબ્દી વર્ષની ઉજવણી નિમીતે વિદ્યાર્થીઓનું સન્માન ટા-૩		

શ્રી જૈન આત્માનંદ સભાનાં શતાબ્દી વર્ષમાં નવા પેટ્રોનો તથા આળવન સહ્યોને આવકારતાં આનંદની લાગણી અનુભવીએ છીએ ...

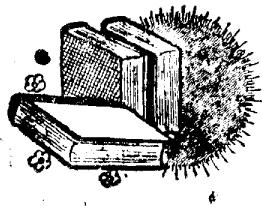
આ સભાના નવા પેટ્રોન સહ્યો.

✓૧	શ્રી જસુભાઈ જગજીવનહાસ કુપાસી	ભાવનગર
	આ સભાના નવા આળવન સહ્યો.	
✓૨	શ્રી મહેન્દ્રકુમાર રાયચંદ્રભાઈ શાહ	ભાવનગર
✓૩	શ્રી મતિ પુષ્પાભેન જ્યેન્દ્રભાઈ શાહ	ભાવનગર
✓૪	શ્રી હરેશકુમાર જ્યંતિલાલ શાહ	ભાવનગર
✓૫	શ્રી ખાન્તીલાલ રતીલાલ શાહ (કમળેજવાળા)	ભાવનગર
✓૬	શ્રી કીર્તીકુમાર ખાંતિલાલ શાહ (ભદ્રાવળવાળા)	ભાવનગર
✓૭	શ્રી હિમતલાલ જ્યંતિલાલ મેઢી	ભાવનગર

નૂતન વર્ષાભિનંદનનું સ્નેહ મિલન

શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા તરફથી સંબત ૨૦૫૨ ના કારતક શુદ્ધ ૧/૨ (ષેસતા વર્ષે) યુધવાર તા. ૨૫-૧૦-૬૫ ના રોજ દર વર્ષ સુજય આ વર્ષે પણ નૂતન વર્ષાભિનંદન અને દુધ પાર્ટી સભામાં સવારના ૬ થી ૧૧ સુધી રાખવામાં આવેલ છે તો સભાના હરેક સભ્યશ્રી ભાઈએ તથા જૈનેનો પધારવા ભારભયું આમંત્રણ છે.

શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા
ખારગેઠાટ-ભાવનગર



શ્રી આત્માનંહ પ્રકાશ

તાત્ત્વિ : શ્રી પ્રમોહદ્જીનાનું એચીમયંડ શાહ

ફનવા વર્ષ માટે પ્રાર્થના ફ

(રાગ-કલ્યાણ)

જીવન ઉજાજવળ આપો નાથ ! જીવન ઉજાજવળ આપો;
ભવ ભય દુઃખને કાપો નાથ ! જીવન ઉજાજવળ આપો.
મનમા વાચા કર્મવહે હું; છિત સર્વનું સાધું;
અષ્ટ પ્રદીપ અંતરમાં તુજને, પ્રેમ ધરી આરાધું. જીવન૦ ૧
પ્રાણી માત્રે સમતા ભાવો, તુજમય સધળું માતું;
સ્થળ સ્થળ તુજને રમતો ભાળું; રાજ્ય બધે સમતાતું. જીવન૦ ૨
પુષ્ય પંથના ઉત્તમ ભાવો, સુજ ઉરમાં ઉભારવો;
કામ કોધાઈ શયુને, સુજથી હુર હઠાવો. જીવન૦ ૩
તૃપ્તિના મમતા કેરા ભાવો, ના સુજને ભરમાવે;
પરમાયે જીવન સુજ જાયે, એવા ભાવો ભાવો. જીવન૦ ૪
નિશ્ચિલ ભાવે જગમાં વિહુરું, શ્રેય કરું સૌ જગનું;
વિન્દ્ય પ્રેમનો મંત્ર ગળવું, પુષ્ય ભરુ નરભવતું. જીવન૦ ૫
કર્મ કથાયો હુર હઠાવું, એ બળ સુજને આપો;
હગદે હગદે સાથી જનલે, સુજ રંગ રંગમાં બ્યાપો. જીવન૦ ૬
અજિત સ્થાનમાં સ્થાપો પ્રભુલુ ! અદ્ધ્ય કીર્તિ માગું;
વાચક હેમેન્દ્રે શુભ ભાવો, જન્મ-મરણ દુઃખ ત્યાગું. જીવન૦ ૭

રચયિતા : ઉપાદ્યાય હેમેન્દ્રકાગરજી-પાટણુ (૬ શ.)

आत्मा अन्यो परमात्मा

प्रवचनकार : आचार्य श्री विजयवल्लभसूरिलु
अनुवादक : डॉ. कुमारपाणि हेसाई

[शुगढ़ी आचार्य श्री विजयवल्लभसूरिलु नी प्रवचन-वाणीने। एक अश अमे अही रजू करीये धीये। आजशी वर्षों पहेंदां मुंबाईना गोडीलुना उपाख्यमां आचार्य श्री विजयवल्लभसूरीलु भारत सांखेनी आध्यात्मिक [यांतनभरी वाणी वही हुती। अही ये वाणीने। केनदर्शनना जाणीता [यांतक डॉ. कुमारपाणि हेसाईये कर्देलो। अनुपाह कमशः प्रगट करीशु, जे वाचकोने भाटे अमूल्य ग्रन्थाङ्कुप अनथे।]

आत्मामांथा परमात्मा कई दीते अनी शक्तय ते विशे विचारीये। आम तो आ [विषय घण्टा गूढ़ छे अने सहजगम्य नथी, तेम छतां अने सरल रीते समज्या कौशलश करीये।

अभिभ्रता अने भिभ्रता केवी रीते?

प्रत्येक आस्तिक व्यक्ति आत्मा अने परमात्माने भाने छे, पछी लेवे तेना स्वरूप अने ओनी अन्य धार्तोमां भत्तसेव होय

जैनदर्शनीदृष्टिये आत्माअने परमात्मामां केही अंतर नथी, आम छतां बाह्य दृष्टिये ने अंतर होभाय छे ते बाह्य कारण्याची सर्वायेलु छे, अने ते बाह्य कारण्या एटेवे ५मं....

कर्माची आत्माना साचा स्वइपने आव्याहित करी हीधुं छे। आत्माने राजमांथी २४ अनावी हीधे। छे।

प्रश्न ये छे के आत्मा २४ छे अने परमात्मा राज छे तो तेने २५मांथी राज हेवी रीते अनावी शक्तय? २५ राजनी गमे तेटली सेवाचाकडी करे, तेम छतां ते २४ ज रहे छे, राज नथी अनी शक्तो। ते ज रीते आत्मा परमात्माइपी राजनी गमे तेटली भक्ता करे। पछु ते तो आत्मा ज रहेशो। राजनी गमे तेटली सेवाचाकडी

करवा छतां प्रजा ज रहे छे, राज अनावी नथी नोकर शेठनी गमे तेटली सेवा करे। पछु ते कहि शेठ अनी शक्तो। नथी, शेठ शेठ ज रहे छे। नोकर नोकर ज रहे छे। आज रीते आत्मा परमात्मानी गमे तेटली भक्ता करे ते परमात्मा अनवामां सर्वां अने सर्वां असमर्थ छे। आ ज विचारथा ग्रेराईने केटलांक दर्शनाचे धर्मयन आत्मामी अलग राख्यो। छे। आत्मा अने परमात्मामां जे लिन्नता छे तेने तेच्या सदाय अमिट भाने छे। तेमतुं कहेवुं छे के प्रजा राजनी कक्षाची क्यारेय पहेंची शक्ती नथी। प्रवत्तुं कार्य तो राजना शुणगान गावातुं अने गे दाथ लेडीने तेनी आजातुं पालन करवातुं छे। जे तेच्या राजनी कक्षाची पहेंची ज्ञेता राज शासन डोनी पर करशे? आज रीते जे आत्मा परमात्मानी कक्षाची पहेंची ज्ञेता परमात्मा शासन डोनी पर करशे?

एउटे आत्मा आत्मा ज रहेशो अने परमात्मा परमात्मा। तुव अने शिव क्यारेय एक नथी थहु शक्ता। वणी मत धरावनाराज्यातुं कहेवुं अभ छे के जे आत्मा अने परमात्मामां करेशा लेह के लिन्नता होय नहीं अने ज ने

संटोषग्र-ओऽटोअ०-६५]

६३

समान होय, तो कौद पण्य आत्माएँ परमात्मानी सेवाभिना, अजन-पूजन शा भाटे करवा? नेकरने ओम क्लेवामां आवे छे कु तुं नेकर नहीं, पण्य शेष समान ज छे, तो ते नेकर अहंकारी गनी जशे अने शेठनी सेवा-चाकरी करवानी अने जड़ नहीं लागे.

आ प्रमाणे एक जिमारने वैद्य एम क्ली दे कु तुं जिमार छे ज नहीं, होते पण्य नहीं अने थर्डश पण्य नहीं, तुं तो सदाकाण निराभय अने नीराणी रहीश, तो ए जिमार वैद्यनी दवा शा भाटे के? अने परहेल शा भाटे पाणे?

आ वातने सूक्ष्मताथी विचारीए तो आ विचारधारा एकांतिक अने भ्रान्त जणाशी. आत्मा अने परमात्माना पोताना स्वाभाविक गुणों। पर चिंतन करतां प्रतीत थशे के बंनेना वास्तविक स्वरूपमां कौद ज्ञेह नथी, आत्माना पोतानो गुण चेतना छे अर्थात् ज्ञान-दर्शन-इप उपर्योग छे. परमात्मानुं पण्य आ ज लक्षण छे.

टेलाक दार्शनिको परमात्माने 'सचिवानंद' पण्य क्लेह छे. सचिवानंद पदमां प्रण गुणोंनो समावेश थाय छे. सत् एटले के सता, चित्त एटसे चैतन्य अने आनंद एटले सुख. प्रणेय काणमां अस्तित्व हेवु, ज्ञान-दर्शनभय (चैतन्यइप) हेवु, अने आनंदइप हेवु, आ प्रणेय गुण ज्ञेह परमात्मामां छे, तेवी ज रीते आत्मामां पण्य वसेला छे.

आत्मा क्यारेय नष्ट थवानो नथी, तेनी सना सदा-सर्वहा रहेशी. आत्मानो चैतन्य गुण पण्य आपणा अनुबवथी खिद्ध छे. जो आत्मामां आ चैतन्य गुण न होत तो ते जड घनी जत.

मृतहेहमां चेतना नथी होती एटसे ए कौद संवेदना अनुबवी शक्तुं नथी. आ प्रमाणे ज्ञे आत्मामां संवेदना न होय, तो ते पण्य

मृतहेहमां ज्ञेह संवेदनहीन ज होय, परंतु आवुं क्लिह होतुं नथी.

आत्मा-परमात्मानो ज्ञेह :

आनंदनो गुण ए आत्मानो स्वाभाविक गुण छे. ए न होत तो ज्ञेने सुखनी प्रतीति कैवी रीते थाय? परमात्माना आ प्रणेय गुण आत्मामां रहेला छे, त्यारे आत्माने परमात्माथी जुहो. कौद रीते गणी शकाय?

गुणोना ज्ञेहने कारणे ज एक पदार्थने जीव पदार्थथी जिज्ञ ज्ञेह शकीए, ज्यारे आत्मा अने परमात्माना गुणोमां कूरी कौद जिज्ञता नथी तेथी तेमने जिज्ञ मानवा चोऽय नथी.

जड अने चेतनना गुणोमां स्वाभाविक ज्ञेह छे. आ बंनेने अलग-अलग जेवा जाणुवामां आवे छे, परंतु आत्मा अने परमात्मानां गुणोमां एवो. कौद मूणभूत के भौतिक ज्ञेह नथी. पनिषुमे आत्मा अने परमात्मामां वस्तुस्वरूपनी दृष्टिए कौद भौतिक ज्ञेह मानी शकातो नथी.

आणुवामांथी नीक्लेला सुवण्य पर धधा माटी अने भेत जमेला होय छे, ज्यारे विशुद्ध सुवण्य पर सहेजे भाटी-भेत होता नथी, परंतु बंनेना सुवण्य तरीकेना स्वाभावमां कौद ज्ञेह के जिज्ञता नथी. मात्र विशुद्ध अने अशुद्धनो जे ज्ञेह दृष्टिगोचर थाय छे ते स्थायी नथी, मात्र थोडा समयनी अपेक्षाथी छे.

आ रीते आत्मा अने परमात्मामां निश्चय दृष्टिए, स्वरूपनी अपेक्षाएँ मूणभूत कौद ज्ञेह न होवा छतां पण्य दृष्टिगोचर दृष्टिए विशुद्ध-अशुद्धनी अपेक्षाएँ होआतो. ज्ञेह स्थायी नथी. समय जतां ए हूर थध शके छे अथवा तो विशाष उपायेथी हूर करी शकाय छे.

परमात्मा पूर्ण शुद्ध होवाथी तेमां पोताना समस्त स्वाभाविक गुण पूर्णताएँ पहेंची गया

६४

[श्री आत्मानंद प्रकाश]

होय छे, ज्यारे आत्मा हजु अशुद्ध होवाथी
ऐसे पोताना स्वाभाविक गुणोंनी परिपूर्णता
माप्त करी नथी. कर्म-विकारीथी आच्छादित
होवाने कारणे आत्मा हजु अशुद्ध छे.

आ रीते आत्मा अने परमात्मामां भौलिक
लेह न होवा छतां पछु देखातुं ऐपाधिक अंतर
ते कुतक अने हर करी शकाय तेवुं छे. आत्मा
अने परमात्मामां हेषाती लिङ्गतानुं कारण
आवरण छे. आवरणे हर थध जतां आत्माने
परमात्मा बनवामां कंध अवशेष आपतो नथी.
ते निःसंशयपैषु परमात्मा बनी जय छे. वेहांत
पछु आज सिद्धांतनुं (निःपैषु करतां कडे छे.

‘तत्त्वमिसि’—“ते (परमात्मा) तुं छे.”

आ रीते शुद्ध संभूतिनयनी दृष्टिये सत्त्वपनी
अपेक्षाए जैन शास्त्रमां ‘एगे आया’ कहुं छे,
अटले के आत्मा सामान्य होय के परम होय,
पछु ऐक ज छे.

आनो अर्थे के के आत्मा स्वभावने होइने
परमात्मामां आसक्ता के भूमिति होय, लां सुधी
आत्मा अने परमात्मा वच्चेतुं अंतर रहे छे.
काम, डोध, लोभ, भौष, राग-द्वेष वगेइने
कारणे कर्मण्धन थाय छे. आत्मा आ ज
विकाराने शरीर अने शरीरने संभाधित संसारिक
भाष्टोना निभित्ताथी वारंवार अपनावे छे.
आने परिणामे ने लुं कर्मण्धन गाठ अने
विशेष मात्रामां थतुं जय, तेटलो आत्मा
परमात्माथी हर चाल्यो जय छे.

तमे कहेशो के आत्मा आ विकाराने शा
माटे चांटे छे? ज्ञानी पुरुष दर्शावे छे के मकान

ते ईट-चूने। वगेइनुं बनेलुं होवा छतां
भीडवश मनुष्य तेने पोतानुं मानी के छे.
अन्यनी उत्री होवा छतां पोताना पुत्र साथे
तेनां लग्न थतां तेना पर पितानी ममता लगे
छे. आ रीते बाध्य वस्तुओ। पर पछु निकटना
संपैक्ने लीधे भौष लगे छे. जे कर्म शरीर
साथे संभाध राखे छे, तेना पर पछु भौष थध
ज्यो। स्वाभाविक छे. तेना प्रत्येना भौषने लीधे
ज आत्मा अने परमात्मा वच्चे आटली भौटी
आध पडेली छे. जे दिवसे कर्माना तरइ भौषहुं
जाणुं हर थशे, ते दिवसे बंने वच्चेतुं आवरण
पछु हर थध जशे. आध पूराई जशे अने
आत्मा — परमात्मा वच्चेनो लेह ठे अंतर
समाप्त थध जशे. हस्ताम धर्माना ऐक शायरे
गायुं छे—

“तु जिस्म जिगर और जहां नहीं जानना।
किर क्यों नहीं कहता, खुदा जो तू है दाना।”

“जे तुं शरीर, हृदय अने संसारने
पोताना नथी मानतो, तो पधी शा भाटे कडी
देतो नथी के हुं खुदा छुं.”

आ त्रिषु भाषतो शरीर अने आत्मा साथे
संभाधित छे. आ त्रिषु प्रत्ये आसक्ति नहीं
होय अने स्व-आत्माथी ए अलग थध जशे,
तो शुद्ध आत्मा (स्वाय णीजुं रहेशे शुं?)
आवी अवस्थामां अने खुदा के परमात्मा कहेवो
सहेजे असंगत नथी. वर्णी आमां अहंकारनी
पछु कोई छाया नथी.

(कर्मशः)



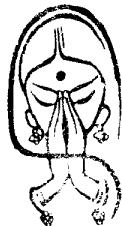
संटैम्पर-ओआक्टोबर]

६५

કર્મરાજની કરામત

(અંક ૭ ૮ થી યાલુ)

સંકલન : કાન્તીલાલ આર. જ્યોતિ
(મદાસર્વ શારહાએકના વ્યાખ્યાનમાંથી)



૫

૫

શેઠના ઘરમાં સારી કન્યા આવી એટલે શેઠને થયુ કે મારા માથેથી ધની જવાણનારી ઓછી થઈ. બધા આનંદથી રહે છે. આ છોકરી (વહુ) પોતાના સસરાને ખહુ જ સારી રીતે સાચવે છે. શેઠ પણ તેને હીકરીની જેમ રાખે છે પણ કહેવત છે ને-આવતી કાલની કોને ખખર છે?

“ ન જાણ્યુ જાનકી નાથે સવારે શું થવાનું છે ”

આવતી કાલ ડેવી ઉગશે તે આપણુંને કૃયાં ખખર છે?

રાજગાઢીના મનોરથી સેવતા શ્રી રામબંદ્રળને આવતી કાલ ડેવી હશે તેની શું ખખર હતી કે મને રાન્યને બહારે વનમાં જવાનું મળશે? આપ પણ બધા ઉપરનું વાક્ય ધર્મની વખત જોલો છો. અને માનો પણ છો. તો હવે ધર્મના વાયદા રાખાય ખરા? કાળ કોઈની રાહ જેતો નથી. માટે વાયદા પાપ કામમાં કરો, ધર્મમાં ન કરો. કે સમગ્રે ધર્મ આરાધના કરવાના, તપ કરવાના ઉત્કૃષ્ટ ભાવ આવે ત્યારે કરી કેશો. ઉત્કૃષ્ટ ભાવે કર્માના બુઝ્ઝા થઈ જશે. અહીં શેઠ, હીકરો, વહુ બધા શાંતીશી રહેતા હતા, તેમાં અચાનક હીકરાને પેટમાં ભયકર દુઃખાવો ઉપણ્યો અને બડી એઘડીમાં કનૈયા કુંપર જેવો ચુવાન હિકરો બધાને છોડીને આદ્ધાની દુનીયામાંથી ચાલ્યો ગયો. અહા, હા હા. કેવું દુઃખ આંધુ? છોકરો નાનો હનો ત્યારે તેની માતા તેને સુકીને ચારી ગઈ હતી. શેઠે માતાની જેમ વાત્સલ્ય, સ્નેહ, આપીને નોકરોની સદ્ગ્યથી પુત્રને ઉછેર્યો. તેમણે મનમાં

આશાના મનના કેટલા ખાંધ્યા હશે? બધા મનોરથી ધુષ્પમાં ભળી ગયા. હજુ હીકરો કુંબરો મરી ગયે. હોત તો આધાત ઓછો લાગત પણ પાછળ ઇપ ઇપના અંબારનેવી પુત્રવધુને સુકીને.... ઘરમાં સાચવનારા સાસુજી છે નહીં એટલે કેટલું કઠીન કહેવાય? તે સમગ્રે આજના જેવો જમાનો ન હતો કે ઇની લંજ કરી લે. એને તો લુદ્દીભર પ્રલયથી પાળવાનું. શેઠને ખુખ જ આધાત છે, ચૌધાર આંદુએ રહે છે, ઝુરે છે, પણી મનમાં વિચાર કર્યો કે હે છુલ! તારા કરેલા કર્મો તારે બોગવવાના છે. તે કોઈને ત્યાંથી પૈસા પડ. વ્યા હશે, તેનું લુટયું હશે, કોઈની થાપણ ઓળખી હશે તો હીકરો થાપણમાં આ કન્યા સુકીને ગયો, પત્નીને તો આધાતનું પુછવું જ શું? સંસારમાં પતિને મન પતી એને જ પોતાનું સર્વંસું છે. શેઠ વિચાર કર્યો કે આ ચુલાન પુત્રવધુ છે એને હવે મારે સાચવાની છે, એને ઓછું આવે નહીં અને સાસરા કે પિયર પક્ષમાં કલાક લાગે નહીં એ રીતે રાખવાની છે, સસરા ખુખ જ ગંભીર અને વિચાળ હિલના હતા, અમારી જેનોને સીતા જેવી વહુ નેથીએ છે તો તેમને કૌશલ્યા જેવું જનવું પડશે, કૌશલ્યા જેવી સાસુ જેવે છે તો વહુને સીતા જેવું જનવું પડશે.

બિચારી છોકરીનું ભાગ્ય કુટયુ કે તેના બાગ્યમાં પતિ સુખ નહીં હોય. તેના હિલમાં તો જબ્બર આધાત છે. આધાતને શાંત કરવા તે શેડા હિવસો માટે પિયર ગંધ, છ મહીના પીયર રહી. સંદ્કારી છોકરી છે વિચાર કર્યો કે ગમે

તે સ્થિતિ હોય પણ દીકરી તો સાસરે જ શોખે, “પિયરની પાદભી કરતા સાસરાની શુણી સારી” એમ સમજુને સાસરે આવી તે કહે છે બાપુજી ! હું અહી રહીશ, ભલે એટા.... શેડના ઘરમાં ચુવાન ઘાટી હતો તે કાઢી નાખ્યો. વૃદ્ધ રસોયો છે, શેડ ખુલ વિદેખવાન અને ધર્મ પરાયણ હતા. તેઓ પોતાની વિધવા પુત્રવધુની સ્થિતિને સારી રીતે જાણતા હતા. શેડ વિચાર કર્યે કે-આ વહુને જો હું સારી રીતે નહી રાખુ, કેમ તેમ વચનના સંભાળાવીને અને દુઃખી કરીશ તો એ દુઃખના કારણે કદાચ આપદ્યાત કરી લેશે એટલા માટે હું તેને એવી રીતે રાખુ કે તેનું મન ઘરમાં રહે અને તેનું ચિત્ત પણ ધર્મમાં રહે. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને શેડ એક દીવસ પુત્રવધુને કણું. એટા ! લો આ બધી ચાવીએં, ઘરની, લાંડારની, તીળેરીની બધી ચાવીએં એમાં છે, હવે તમે આ ઘરના માલીક છો, ઘરમાં જેટલી વસ્તુઓ છે તે જધા પર તમારો અધિકાર છે, તમારી જે ઈચ્છા થાય એ પ્રમાણે ઉપરોગ કરશે. તમારે ખાવા પીવા પહેરવા એઠબા માટે જે કોઈ વસ્તુ જોઈએ તે મંગાવી લેનો પણ એક વાત આસ ધ્યાનમાં રાખજે કે તમારા જીવનનું એવું આચરણ કર્યારે પણ ન થાય કે જેથી તમારા પિતૃ કુળમાં કે અસુર કુળમાં કલંક લાગે, અને સમાજમાં નીચુ જોવુ પડે સસરાની વાત વહુણે સહર્ષ સ્વીકારી લીધી. હવે આપા ઘરની સત્તાધીશ તે બની ગઈ, આપા ઘરનો બાર તેને માથે આવી પડવાથી તેનામાં ગંભીરતા પણ આવી ગઈ. તેના ઊંઠાર અને સારા સ્વભાવને કારણે પાણીઓમાં અને ઘરમાં જધા માણસોને (પ્રય થઈ ગઈ, નેાકરોની સંભાળ ગણ માતાની જેમ રાખતી હતી. સસરાજુ તો એટી દીકરી કરીને બોલાવતા, ખાવા પીવાની ખુલ નગવડતાએ)

અને બધી આજાહી તેને મળી ગઈ એટલે તે ડાટસાહશી ઘરના કાર્યો કરતી. ધીમે ધીમે તે પોતાનું દુઃખ ભુલી ગઈ. રોજ સારા આરા ખાન પાન જમવા લાગી. સ્વાહીએ અને માહક સોજન જમે છે તેથી ઇન્દ્રોયોના ઘાડા ઘુસા થઈ ગયા. સારા જોજનની માથે જીવનમાં ને જાયમ અને તપ ન હોય તો તેનું જીવન પતનની જ્ઞાયમાં પરકાઈ જાય છે. બલે તે વિધવા હતી પણ ચુવાની તો પુર જેશમાં જીલેલી હતી. સારા સારા જોજન આય અને તપ ન હોય તો શું થાય ?

તપ તો હતો નહી એટલે ઇન્દ્રોયોના વિષય વાસનાના ઘાડા હોડવા લાગ્યા.

બગવાને સાંતોને કણું છે કે હું મારા સાધક ! તું રોજ રોજ સ્વાહીએ જોજન જરીઝ નહી, શુદ્ધ અદ્વય પાળવા માટે તું નીરસ હુએ આહાર કરને.

આ પુત્રવધુના મનમાં તો અશુભ વિચારેણે અહૂ જમાયો. તેના વિચારેણાં વિકૃતિ આવી. તેણે મનમાં ને મનમાં વિચારું કે હું કોઈ એવો ઉપાય કરી કે જેથી મારી કામવાસනા શાંત થાય પણ મારા સસરાજુએ મને કણું છે કે તમો સસરા કે પિયર પક્ષમાં કલંક લાગે તેનું કાયં કરશો નહી. તો મારા પિતા તુલ્ય સસરાજુનું વચન તો સામવુ પડે. હવે મારુ મન કન્દ્રાલમાં રહેતુ નથી. સંસારના સુણોને જોઈએ છે. મારી વાત આહાર કોઈ જાણે નહી અને એકેય પક્ષને કલંક લાગે નહી એવો કોઈ ઉપાય શોધી કાઢું. આ વિચારની સસરાજુને જાર પડી કે પુત્રવધુ શું કરવા માગે છે તેણી તેણે પુત્રવધુને સુધારવા કેવો કીમીયો. કર્યો....

તે હવે પણ આવતા અંકડાં....

(કમશા :)



માર્ગનામાર-એસેટોબર-૬૫]

૬૭

દાહાસાહેખ-ભાવનગર મધ્યે ઉત્ત્વાસમય-પ્રકાવશાળી

અદ્ધિક ચાતુર્માસની એક ઝલક અદ્ધિક

ભાવનગર તપા. ૨૩૧૦૩૪૨-એસેટોબર-૬૫ જૈન સંઘની ધર્મા સમયની આચારિકરી વિનાિતનો સ્વીકાર કરી ઉદ્દેશ્યના સુધીધી સમય ણાથ તા. ૩૦-૬-૬૫ના શક્વતી લભ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશ યાદ દાહાસાહેખમાં પૂજય ગચ્છાધિપતિ આચાર્ય શ્રી સુપોષાધસાગરસૂરિ મહારાજ સાહેણના પૂજય ભગવતીલું સૂત્રના પ્રાભાવિક પ્રવચનો તથા કૃષ્ણનગર જૈન ઉપાશ્રેયે પૂજય આચાર્ય શ્રી મનેદારકીર્તિસાગરસૂરિ મહારાજ સાહેણના પૂજય ઉત્તસાધ્યયન સૂત્રના પ્રાભાવિક પ્રવચનો તથા નાધનસુરી અને નૂતન ઉપાશ્રેયે પૂજય પ્રવત્તક શ્રી યશકીર્તિસાગરલું મહારાજની નિશ્ચામાં પૂજય સુનિવય્ય શ્રી રાજકીર્તિસાગરલું મહારાજના 'ધર્મરિતન' અન્થના પ્રાભાવિક પ્રવચનો તથા શાસ્ત્રીનગર જૈન ઉપાશ્રેયે પૂજય સુનિવય્ય શ્રી નાતિસાગરલું મહારાજના પર્વની આદાધનાના પ્રભાવે તથા યુવા સુનિવય્ય શ્રી ઉત્થકીર્તિસાગરલું મહારાજના રવિવારીય જાહેર પ્રાભાવિક પ્રવચનોના પ્રભાવે શ્રી સંઘમાં આરાધનાનું અભૂતપૂર્વ 'ઉત્સાહનુ' વાતાવરણ પ્રસાર થશું. તા. ૧૬-૭-૬૫ના મંગલ દિવસે ૧૦૦ આરાધકોએ શ્રી ગણુધરતપની સમૂહ આરાધનામાં ૧૩ ઉપવાસ અને ૧૧ પારદ્ધા સહ ૨૪ દિવસની ઉત્ત્વાસમય અનુમોહનીય આરાધના કરી. ૧૧ ભાવિકોએ તપસ્વીની અભિતનો લાલ લઇ જીવન સંકળ બનાવ્યું. તેમજ શેડ શ્રી કૃતેચંદ સોમચંદ શાહ પરિવાર ચાતુર્માસ પરિવતનનો લાલ લેશે. વ્યાધા 'છ'રી' પાલીત યાત્રા સંઘનો શેડ શ્રી ચંદ્રકાન્ત હક્કમચંદ વોરા ટાણાયાણા પરિવાર લાલ લેશે. તેમજ ભાવનગરથી પાલીતાણા મિદ્ધગરનો છ'રી' પાલીત યાત્રા સંઘનો ખડકસલીયા નિવાસી શેડ શ્રી રમણીકલાલ હરિકલાલ શાહ પરિવાર લાલ લેશે. યશસ્વી ચાતુર્માસ પૂજ્યું કરી પૂજયશ્રી અમદાવાહ થઈ વણાપુર પદ્ધારો.

કોટિ કોટિ વંદન.... પૂ. ગુરુદ્વારેના ચંદ્ર કુમલમાં....

પરમાત્માની લગનાં.....



તપથી કર્મનો દોષ દૂર થાય છે,
 મન અને કાયા વિશુદ્ધ બને છે,
 તિર્ય્યું, તપ અને ત્યાગ કરવા છતાં
 તેમાં દીનતા ન હોય તો તારણ નથી.
 મૂળ અને તરસ લાગે ત્યારે જીવ કેવો આદુળ બ્યાદુળ થાય છે
 તેમ પરમાત્માને પામવા માટે જીવ આદુળ બ્યાદુળ થાય
 અને તેની જ લગની લાગી બાય તો પરમાત્માને પાંચી શકાય.

સંકલન : પ્રતાપભાઈ એન. દોશી



ફોલો

ફોલોટ નં. ૬૭૬-B, કૃષ્ણનગર, ભાવનગર

... ગોડીજુ ઉપાશ્રય-ભાવનગર શહેર જદ્યે ...

અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ

શ્રી ગોડીજુ પાર્વિનાથ કૈન હેરસર ઉપાશ્રય કમિટીની આગ્રહણારી વિનંતીને સ્વીકાર કરી પરમ પૂજય શાસનસાદુ સમૃદ્ધાયના પરમ પૂજય શાસનપ્રભાવક આચાર્યદેવ શ્રી વિજયમોતીપ્રભસ્સૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબના પદૃપદર પરમ પૂજય શાસનદીપક આચાર્યદેવ શ્રી વિજયનથપ્રમસ્સૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબ, પૂજય પન્યાસ શ્રી યશોહેવાવિજયજી મહારાજ, પૂજય સુનિરાજ શ્રી લભિધનિજયજી મહારાજ, પૂજય પ્રવચનકાર યુવાસુનિ શ્રી જયપ્રલિવિજયજી મહારાજ આદિ ઠાણ્યા-૪ ચાતુર્માસાથે અતે પદ્ધાર્ય છે. અખાડ શૂદ્ર-૫ ને સોમવાર તા. ૩-૭-૬ પના રોજ ખુલ્ય જ ઉત્તમાઙ્ગ ઉમ ગપૂર્વક શાનદાર રીતે ચાતુર્માસ પ્રવેશ થયેલ. ચાતુર્માસ પ્રવેશ ખાદ સાંકળી અઠુમ-સાસુદાયક મોક્ષદાંડ તપની લંઘ આરાધનામાં ૨૫૦ તપસ્વી નેડાયેલ, ૬૨ રવિવારે નહેર પ્રવચન શ્રેષ્ઠી “કર્મતણી ગતિ ન્યારી” નાં વખ્યમાં અપાર જનમેહની ઉમેલ, પચ્ચુંબણ પર્વની ભંધ આરાધના, પચ્ચુંબણ ખાદ સંસારની સ્વાર્થ જણ લાગ-૪ની નહેર પ્રવચન શ્રેષ્ઠી તથા ભંધાતિલંઘ ક યુવા શિખીરતું આયોજન, પરમ પૂજય શાસનપ્રભાવક આચાર્યદેવ શ્રી વિજયમોતીપ્રભસ્સૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબની જન્મ શાનાભિન નિમિત્તે શાનદાર હશાહીની મહેતસપ, ૫૧ છોડનું ઉજ મળું તથા દિવાળી ખાદ પૂજય હાદ મહારાજની સ્વર્ગવાસ તથા નિમિત્તે પાચાહીની મહેતસવતું આયોજન અને ચાતુર્માસ પૂર્ણાહુરીત ખાદ માગશર વહ-૧ના શાનુંભય તીર્થને છ'રી પાદિત સંધ નીકળશે. આવા અનેક વિધ શાસનપ્રભાવક કાર્યો દ્વારા વિ સ. ૨૦૫૧ની સાતનું ચાતુર્માસ અવિસ્મરણીય બની રહેશે.

પૂજય શુરૂહેવોના ચરણોમાં કોડી કોડી વંદના....



❖ हिन्दी विभाग ❖

धारावाहिक धार्मिक कथा

भाग-३

जिनदत्त

लेखक : राजयश विजय

इस से पूर्व आप पढ़ चुके हैं कि जिनदत्त समुद्रमें गिरने के बाजूद बच गया और उसका विवाह विज्जाहरी से हो गया। विवाह के अवसर पर उसे १६ विद्याएं और मन इच्छित विमान बनाने की शक्ति मिली। विद्या के बल पर ही वह व्रामन बना।

अब आगे पढ़िये।

विज्जाहरी ने विमलमती से सहा, “यह जिनदत्त ही है तथा यह विद्यावल से ऐसा हुआ है।” तब श्रीमती ने कहा, “हे सखि! प्रायः यह सब सत्य ही लगता है।” राजा आदि के बचक सुनकर विमलमतीने कोध पूर्वक कहा, “हे मुझे! अब मुझ कोई धोखा नहीं दे सकता। मुझे ऐसा विश्वास है कि इस के पास विद्याएँ सिद्ध हैं अथवा देवता आदि का इसे बर प्राप्त है। अथवा यह कोई धूर्त है।” फिर विमलमती व्रामन को कहने लगी, ‘मैं तुम्हारे कहने से ठगी नहीं जाऊँगी। द्वापाक सेठ की पत्नियों की तरह मैं अपनी स्थिति नहीं बनाना चाहती।’ पास मैं घैठी हुई श्रीमती कहने लगी, “हे बहना यह द्वापाक सेठ कौन है?” फिर विमलमती ने द्वापाक सेठकी कथा कहनी प्रारम्भ की।

प्रतिष्ठानपुर नगर में जितशब्द नाम का

राजा था। उस नगर में एक सेठ रहता था। उस का नाम द्वापाक था। उस के पास कोई रूपये ये परन्तु वह बहुत अधिक कृपण था। उसने न कभी अच्छा खाया था, नहीं अच्छा पीता था। धन होने पर भी वह महादृष्टि था। धन के लिये वह स्थान स्थान पर जाता था। उस की दो पत्नियां थीं। उन को कोई सांसारिक सुख प्राप्त नहीं था। खान, पान, वस्त्र, विस्तार आदि सब गरीबों जैसे थे। एकबार एक धूर्त उन के मकान के पास आया। उसने मकान के अन्दर झांक कर देखा तो दोनों स्त्रियोंको फटे पुराने वस्त्रों में देखा।

वह धूर्त किसी यक्ष के मन्दिर में गया। पहले उसने तीन उपवास किये और फिर यक्ष को प्रत्यक्ष कर कहने लगा, “मुझे द्वापाक सेठ का रूप दो।” उस ने उत्तर दिया, यह अनुचित है, मैं ऐसा रूप नहीं दूँगा। फिर

उस धूर्ते ने चार ब्रह्म किये। फिर वह यक्ष सोचने लगा, “बद्धि ये मेरे कारण मर गया तो मेरा स्थान निष्कल है जाप्या।” ऐसा विचार का उसे हापाक सेठका स्पष्ट देखिया जौर उसे शीघ्र बहाँ से निकल जाने के लिये कहा।

मन इच्छित रूप का वरदान मिलने पर धूर्ते ने हापाक सेठ का स्पष्ट धारण किया और निर्विघ्न सेठके घर में पहुंच गया और सर्वप्रथम सेठ के लड़कों तथा कोशाल्यक के मन्मुख कहने लगा—

दानं भोगस्तथा नाशः

**स्याद् इव्यस्य गतित्रयम् ।
यो न दर्शे, न भुड़कते च,
तस्य तृतीया गर्भीर्वति ॥**

अर्थात् धन की तीन गतियाँ हैं (१) दान (२) भोग (३) नाश। जो न देना है, जो न उसका उपभोग करता है तो धन की तीसरी गति (नाश) होती है।

फिर वह कहने लगा, “एक अमीर व्यक्ति समुद्र में झूब कर मर गया और उसके सारे जहाज भी समुद्र में झूब कर भमात हो गये। इस से मेरे हृदय पर बहुत बड़ी चोट लगी और मैं ने यह हृद निश्चय किया कि यदि मैं कुशल पूर्वीक घर पहुंच जाऊं तो मैं भव को मनोकामनाएँ पूर्ण कर दूँगा और अपर्ना कृपणी का त्याग कर दूँगा।” इस प्रकार कपोल कल्पित भाषा द्वारा अपने परिवार के सदस्यों को संतुष्ट किया।

दोनों खिलों को सुवर्णभूषण तथा पहिनने के लिए कीमति वस्त्र दिये सेठ के पुत्रों हारपालों

तथा कर्मचारियों को पहिनने के लिए बढ़िया वस्त्र दिये तथा खाने के लिये दृध, चावल भी, बढ़िया पक्वान और भिठाड़िया आदि दी और स्वयं भी खाने लगा। घर के समीप एक दानशाला खुलवा दी जिस में दीन आर अनाश लोगों को भोजन दिया जाता था। कभी कभी साधर्मि बत्सल भी करता था। सभी मन्दिरों में धन देने लगा। धूलनी हुई चारपाई पर दोनों खिलों के साथ गवांज आदि भी खेलता था। उस ने निम्न लिखित श्लोक को सत्य प्रमाणित कर दिया :

कीटिका मञ्चितं धान्यं,
मक्षिका मञ्चितं मधु ।
कृपणोः मञ्चितं वित्तं,
परेण्योपगुज्यते ॥

अर्थात्: कीटियों द्वारा एकत्रित किया हुआ हुआ अनाज मधुमक्षियों द्वारा मञ्चित शहद, कम्जुमो द्वारा एकत्रित किया हुआ धन दूसरों के हृदय ही उपभोग में आता है।

कुछ दिनों के पश्यात् अमरी हापाक सेठ भी घर लौट आया। घर आने पर द्वारपालों ने उसे घर में प्रवेश ही नहीं करने दिया। द्वारपाल ने कहा, “तुम कौन हो।” उस ने कहा, “मेरा नाम हापाक है और मैं घर का भवामी हूँ।” द्वारपाल ने उत्तर दिया, “एक हापाक तो पहले से ही घरमें वैठा है, तुम तो कोई धूर्त लगते हो।” वह विचार करने लगा, इस समय वान कर्नी निर्णीक है, प्रातः देखा जायगा।”

प्रातः होने पर कम्जुम सेठने किसी दूसरे

भाजानं ई प्रकाश

३

हापाक सेठ को अपने घर में देखा। वह विचार करते लगा, “किसी धूर्ता ने मेरे घरको छुट लिया है। मुझे तो इस में प्रवेश भी नहीं मिल रहा, अपने घर में ही मुझे चोर समझा जाता है। मैं अपना दुःख किस के आगे कहूँ?” इस प्रकार विचार मग्न होते हुए उसने कुछ फल आदि लेकर राजा के पास जाने का निरचय किया। राजा के पास जाने पर राजाने उसका कुशलक्षणम् पूछा तथा सेठने अपनी अमम्या राजा के सम्मुख रखी।

राजा न्यायप्रिय पर्व धर्मनिष्ठ था। राजाने अपने सिपाहियों को भेजकर बनावटी हापाक सेठ, द्वारपाल आदि वर के लोगों को बुलाया। बनावटी सेठ रत्न, मणि, स्वर्ण तथा आभूषणों से भाल भरकर राजों को भेंट देने के लिये ले गया। जब दोनों सेठ राजा के पास पहुंच गये तो राजा भी विभिन्न हो गया कि न्याय कैसे करे? संत्रियों से विचार कर हापाक सेठ की दोनों पत्नियों को भी राजदरबार में बुलाया गया।

राजाने अपना न्याय सुनाते हुए कहा, हे मुन्दरियो! मैं नहीं जानता कि कौनसा सेठ सच्चा है? मैं न्याय आप पर छोड़ता हूँ। जो भी इनमें सच्चा सेठ है उसकी बाहों में चले जाओ। इस का पुण्यपाप आप पर होगा। मैं इस मम्बन्द में निष्कलंक हूँ।” उनमें से एक सेठने बनावटी भेठकी अंगीकार किया। वह बनावट देखकर सच्चा सेठ तो देताश हो गया और उसे यहाँ दुःख हुआ। राजा के सिपाहियोंने उसे मारना भी शुरू कर दिया।

असली हापाक सेठ की दुःखा देखकर धूर्तहापाक का दिल कहुणा से भर गया और राजा से कहने लगा, “हे कुपालु राजन! मैं कुछ कहना चाहता हूँ।” राजा ने कहा, “अगर तुम्हारा कोई दण्ड भी होगा तो तुम्हें क्षमा कर दिया जाएगा। मत्य बोलिए।” तब धूर्तने कहा, “देव! वह सेठ सच्चा है मैं ही धूर्त हूँ।” तब धूर्तने सब बृत्तान्त राजा से कहा। तब धूर्तने यब कुछ असली सेठ को देते हुए कहा:—

**दातव्यं भोक्तव्यं,
सति विभवे सञ्चयो न कर्तव्यः।
यदि सञ्चयं करिष्यमि,**

हापा ! पुनरागमिष्यामि ॥

अर्थात् अगर धन हो तो दान दना चाहिये, धन को स्वर्च करना चाहिये परन्तु धन का सञ्चय नहीं करना चाहिये। यदि सञ्चय करोगे तो मैं हापा फिर आ जाऊंगा। फिर बनावटी हापा अपने स्थान पर चला गया।

फिर चिमलमती ने वामन और श्रीमती को सम्बोधन करते हुए कहा, “मैं अपनी परिस्थिति सेठ की पत्नियों के सद्गत नहीं बनना चाहती।” जिनदत्त रूप वामन अपनी पत्नियों की शौल में दृढ़ता देखकर प्रसन्न हुआ।

राजा का हाथी मदोन्मत्त हो गया। मर्य प्रथम जिस वर्म्मे के साथ बन्धा था उसे तोड़ दिया। फिर वह गजराज अपनी सुण्ड से बहुत से नगरवालियों को मारने लगा। चाँड़ों को तोड़ने लगा। सब मनुष्यों के लिए वह साक्षात् कालका रूप था। सभी दिशाओं में भय व्याप्त

हो गया । तब राजा भी बहुत भयभीत हो गया और यह उद्घोषणा करवाई “जो भी कोई व्यक्ति इस हाथी को काढ़ करेगा उसके साथ राजकन्या मदनमंजरी का विवाद होगा तथा उसको आधा राज्य दिया जायगा ।” उद्घोषणा सुनकर वामन (कूबडे)ने इस कार्य को करने की स्वीकृती दी ।

उसने गजवशीकरणी विद्या को स्मरण किया । उसने हाथी के पास आ कर कहा, “हे गजराज ! बृशा लोगों को क्यों परेशान कर रहे हो । यदि तुझमें शक्ति है तो मेरे सामने आओ ।” यह सुनकर हाथी कोपायमान होकर अपनी सुण्ड को ऊँची कर दौड़ने लगा । वामन उसके आगे आगे तेजी से चलने लगा । इस प्रकार करने से हाथी एकदम थक गया । फिर वामन जल्दी से हाथी के ऊपर चढ़ गया और कुम्भस्थल पर मुष्टि प्रदार कर उसे वश में किया । जब हाथी पूरी तरह ठीक हो गया तो उसे हस्तीशाला में बान्ध दिया ।

फिर वामन ने राजा से कहा, “अपनी प्रतिज्ञा पूरी कीजिए ।” राजा सोच विचार में पड़ गया क्यों कि कूबडा रूप जिनदत्त सुन्दर नहीं था । राजा सोचने लगा कहाँ मेरी रूपवती कन्या और कहाँ यह कूबडा । इन दोनों का मेल नहीं खाता । इस प्रकार दालते हुए राजाने कई दिन व्यतीत कर दिये । कुछ समय व्यतीत होने पर उस नगरमें एक केवली भगवान पधारे । मालीने आकर इस की सूचना राजा को दी ।

राजा भी केवली भगवन्त की देशना सुनने के लिये पघारे । केवली भगवन्त ने अपनी

आत्मानं द प्रकाश

देशना में कहा, “भव्य जीवों में ज्ञान ही दुर्लभ है । कहा भी है :-

**आहार निद्रा भयमौथुनानि तुल्यानि
सार्वे पशुभिनराणम् ।**
ज्ञानं नराणामधिको विशेषो,
ज्ञानेन हीनाः पश्वो मनुष्याः ॥

अर्थात् पशुओं और मनुष्यों में आहार, निद्रा, भय और मौथुन समान रूप से होते हैं परन्तु मनुष्यों में ज्ञान विशेष रूपमें होता है । ज्ञान से रहित मनुष्य पशु हैं ।

तुल्येऽपि उदरभरणे मृद

अमृदानां पश्य चिपाकम् ।
एकेषां नरकदुःखम् ,
अन्येषां शाश्वतं सुखम् ॥

अर्थात् - मूर्ख और बुद्धिमान पेटभरने में एक समान हैं परन्तु इसके फल को देखो । एक को तो नरक का दुःख मिलता है और दूसरे मोक्षरूपी शाश्वत सुख प्राप्त करते हैं ।

देशना के अन्नमें राजाने पूछा, “हे प्रभो ! मेरी पुत्री का वर कौन होगा ।” उस समय केवल ज्ञानी ने कहा, “यही वामन तुम्हारी पुत्री का वर होगा ।” राजाने कहा “यह अनुचित सम्बन्ध कैसे ठीक रहेगा ।” केवली भगवानने कहा, “राजन् । यह ही उचित योग है । इसे केवल कूबडा ही न समझा, यह वसन्तपुर के क्रोडाधिपति जीव देव सेठ का पुत्र जिनदत्त है । यह विद्या के बल से वामन बना है और ऐसा करते हुए यह केवल विनाद मात्र ही करता है ।”

स्मारकानंद प्रकाश

५

राजा अपने स्थानमें आपिस आया और वामन को कहने लगा, “हे विद्यासिद्ध ! हे गुणवृद्ध ! हे जगत्प्रभित ! हे मायममृद्ध ! अपने कौतुक को छोड़कर अपना असली रूप मेरी पुत्री को रक्षीकार करो !” राजा की ब्रेणा

से वामनने अपना असली रूप प्रकट किया तथा अपनी पुत्री मदनमंजरी का विवाह जिनदत्त के भाष्य कर दिया । राजाने आपे राज्य को बताय सर्व राज्य जिनदत्त को दे दिया और स्वयं दीक्षा प्रहण कर ली ।

[क्रमशः]



दोषी कौन धर्म या उसके अनुयाई

—मुनि नवागच्छ विजय

भास्त्रदायिक दर्गे हमारे देशके लिये काँई नहीं बात नहीं है। जब जब भी काँई धार्मिक प्रसंग उपचित होता है—चाहे वह हिन्दु धर्म से संबंधित हो या इस्लाम, सैकड़ों होगों के मौत का कारण बनता है। धार्मिक प्रसंग उनके लिये आनंद और उत्सव नहीं, चित्कार और भातभ का पैगाम लेकर आते हैं।

६ दिसम्बर १९५२ का दिन भी हजारों निर्वीप लोगोंके लिये चित्कार मात्र और सुरक्षा उक्फनती नहीं लेकर आया जिसने लाशों के ढेर खड़ कर दिये। हजारों परिवार बेघर, बेसहार हो गये। कुछ दिनों तक सम्पूर्ण देश हिमा की चपेट में अत गमन और साम्राज्यिक दंगों के दानव ने सर्वत्र अपने हाथ कैला दिये सारी सुरक्षा व्यवस्था धरी की धरी रह गई। सारा तंत्र निक्षिक्य हो गया।

इस बार दंगों का कारण कोई धार्मिक उत्तमवा-
या पर्यावांशिक नहीं था। यदि प्रसंग या बाधाएँ
भस्त्रिय दातें को ढहाना। बाबरी मस्जिद तथा
ढही हजारों लोगों की बेग कीमती जिदगियां
ढह गईं और उनकी आस्था के केन्द्र रौकड़ों
मंदिर भी ढहाये गये। पाकिस्तान और चांगला-
देश आदि अन्य देशों में भी मंदिरों को

गिराया और जलाया गया। 'डंगाईया' और उपद्रविया से जैन मन्दिर भी बच नहीं पाए और कई जैन मन्दिर भी लोडफोड के शिकार हुए। इसमें हम जैन को दुख और वेदना होना स्थानांकित है।

ऐसी स्थिति में हमारे मनमें ये प्रश्न खड़ज
रूप से उपस्थित होते हैं कि हमारे देश का
धर्मिक भविष्य कैसा होगा। क्या धार्मिक
महिलाओं का माध्यात्म्य पुनः स्थापित होगा।
क्या धार्मिक कठूलों का उन्माद बढ़ता ही
जाएगा। क्या हम नकरतकी ग्वार्डों पार सकेंगे।
इस प्रश्नोंके उत्तर खोज पाना आसान नहीं है।

यहाँ चित्तनीति विषय यह है कि यहाँ दोषी कौन है। धर्म या सम्प्रदाय या उसके अनुयाई, राजनीति या राजनेता, मंविधान या न्यायालय। कुछ स्थण के लिये राजनीति या मंविधान को पक्का और हठा दे। धर्म और सम्प्रदाय जिसके लिये इनका उत्पात और उपट्रव किया जा रहा है। उसके विषय में पक्का तटस्थ विश्वासण का आवश्यकता है।

आइचर्य की बात यह है कि उसे जिसका अवतरण संसार में 'दीन दुखियों' के उद्धार के लिये हुआ है, जिसका कार्य मुरझा, बन्धुत्व, माईचारा, स्नेह, भद्रभाव, प्रेम और सदगणा।

ज्ञानानन्द प्रकाश

५

विकास करना रहा हो, जिस का उन्म संसारके दुखों को दूर करने के लिये सर्वत्र सुख का साम्रज्य केलाने के लिये हुआ हो, जो भौतिक आयि, व्यक्ति और उपाधि से युक्त कर मोक्ष दिलाने की गारंटी देता हो। वह संसार को इतना दुःखी क्यों बना रहा है। जिसकी गर्ते जीवन आनंद और निर्भयता देने का था वह आज मनुष्य को भौत, बेइना, डर और आतंक क्यों दे रहा है। धर्म को मनुष्यने इमलिये थारण किया था कि वह उसे बन्धन, प्रेम और मुक्ति देगा, परन्तु बजाय इसके वह दर्शन वृणा, द्रुप वैर और वंश ही दे रहा है। आविर ऐसा क्यों हो रहा है। क्या धर्म आपने इन्हें से छष्ट हो गया है। क्या उसका स्वरूप बदल गया है। जो वर्तमान गियति उत्पन्न हुई उसका एकमात्र कारण घम ही है। क्या धर्म ही इन सभी मंकटों की जड़ है। और यदि धर्म ही इसका कारण है तो ऐसे धर्म को तो दूर से ही मराम करनी चाहिये। चाहे वह धर्म जैन हो या बौद्ध, दिन्दु हो या इस्लाम, मिथ्य हो या ईसाई। सभी धर्म एक ही बन्सी के छेद हैं। इमलिये सभी धर्म अस्वीकार्य हैं। किसी एक से भी लक्ष्य मिछ नहीं होता। सभी धर्म यही दावा करते हैं कि हमने जो सत्य खोजा है वही अनिम भव्य है। इसी धर्म के पालन से मोक्ष मिल सकता है। इसी धर्म से संसार को स्वर्ग बनाया जा सकता है। परसे में इन धर्मों की सत्यता पर प्रश्न चिन्ह लगता है। सच्चा धर्म कौन सा है। योग किसका स्वीकार करे। कौन सा धर्म उन्हें मुक्ति दे सकता है। व्यक्ति किसी एक ही धर्म का पालन कर सकता

है क्यों कि सभी धर्मों के ममवान् गुरु, मंदिर, पूजा आ और प्रार्थना स्थान भिन्न भिन्न है। सभी के धर्मप्रथम मान्यताएँ और विश्वास भी अलग अलग हैं। धार्मिक विषयमें व्यक्ति किसी एक ही आस्था के साथ जो सकता है और किसी एक ही आस्था को लेकर सर सकता है। यह व्यक्ति की लाचारी है और वह कहर भी किसी एक विश्वास को लेकर ही होता है और धर्म के विषय में जो जितना कहर होगा वह इतना ही धार्मिक असहिष्णु होगा।

सर्वप्रथम हमें वह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि धर्म का प्रदुर्भाव हुआ और उसके बाद उस धर्म के सम्प्रदाय का। प्राणिमात्र के कल्याणके लिये ही धर्म का जन्म होता है। किंतु उस धर्म की रक्षा के लिये सम्प्रदाय का। सम्प्रदाय का उद्देश्य किसी भी उपाय से उस धर्म की द्विपाजत करना होता है। तब धर्म दब जाता है, उसका उद्देश्य भी नष्ट हो जाता है, केवल बचता है उसका सम्प्रदाय जिसमें अंध, बिवेकहीन लोगों की भीड़ रहती है। उस भीड़ का यह दावा होता है कि वह अपने धर्म के नन्हे प्रतिनिधि हैं। वह भीड़ अपने धर्म और सम्प्रदाय के लिये सब कुछ उपयुक्त और जायज भमझाती है।

ज्ञाना जब पदार्थ से निकलता है तब वह अपने आप में बहुत पवित्र और स्वच्छ होता है, पर जैसे ही वह अपना स्थान छोड़कर आगे बढ़ता है। उसमें अन्य अनेक नदी, नाले नालियां आकर मिलती हैं और ज्ञाने के मूलरूप का विकृत कर देते हैं। वह ज्ञाना चाहकर भी

अपने मुलरूप को कायम नहीं स्वयं सकता यह उसकी मजबूरी होती है।

धर्म भरना है और सम्प्रदाय उसमें आकर गिरने वाले नहीं नाले और नालियाँ। झरनेकी स्वच्छता और पवित्रता की गारंटी दी जा सकती है, पर नहीं नाले और नालियों की पवित्रता की गारंटी किसी भी हालत में नहीं दी जा सकती।

वर्तमान परिप्रेक्ष्यमें जो कुछ हो रहा है, वह धर्म के नाम पर ही हो रहा है, पर इसमें धर्म का कोई दोष नहीं है। धर्म इसके लिये कभी भी उत्तर दायी नहीं हो सकता। दोषी और उत्तरदायी केवल सम्प्रदाय है सम्प्रदायिक लोग हैं। धर्म और सम्प्रदाय को अलग देखें। किसी की हत्या या खून करने का उपदेश धर्म नहीं देता न दे सकता है, पर सम्प्रदाय इसकी अनुमति देता है। धर्म को महान, दिव्य और तारणहार कहा जा सकता है, पर उसके सम्प्रदाय को कदापि महान, दिव्य और तारणहार नहीं कहा जा सकता। न सम्प्रदाय इस गोभी होता है।

जो दरों हो रहे हैं वे धार्मिक नहीं, सांप्रदायिक हैं। इसलिये जो कुछ हो रहा है वह सम्प्रदायों के द्वारा हो रहा है, धर्म के द्वारा नहीं। सम्भार का प्रत्येक धर्म संप्रदाय के शिक्षकों में कसा हुआ है। अशोध्या में जो बाबी मस्जिद ढाई गई वह किसी धर्मके द्वारा नहीं एक पक्ष या सम्प्रदाय के द्वारा ढाई गई है। मस्जिद गिरने के बाद उसकी प्रतिक्रिया में जो हिन्दु और जैन मन्दिर तोड़े जलाये गये वे दर्म के द्वारा नहीं, संप्रदाय के द्वारा तोड़े गये और जलाये गये हैं।

अब सोचने की बात यह है कि वह संप्रदाय किन लोगों के हाथ में रहता है। लोग धर्म के उपासक होता है और संप्रदाय के अनुयायी। उपासक आराधक, विवेक और शान्त होता है। जबकि अनुयायी उपदेशी और अशान्त अनुयायी के लिये संप्रदाय ही सब कुल होता है और उपासक के लिये धर्म। संप्रदाय का व्यामोह सभी उपदेशों की जड़ है। व्यक्ति को धार्मिक होना चाहिये सांप्रदायिक नहीं यदि सांप्रदायिक हो भी तो उसमें सांप्रदायिक व्यामोह नहीं होना चाहिये।

आधिकारिकता है प्रत्येक धर्म के लोगों में यह कर गये सांप्रदायिक व्यामोह को दूर करना। हमारा देश धर्मनिरपेक्ष है, पर सांप्रदायिक व्यामोह निरपेक्ष नहीं है। सभी राजनीतिक पार्टियाँ अपने हितके लिये इस भाष्यायिक व्यामोह को बढ़ावा देती हैं।

जब तक इस व्यामोह को दूर नहीं किया जाता तब तक विभागीय विभागों वाले घटती रहेगी। अंतमें विभागीय विभागोंके शब्दों में- मौतकी आंधी हवा को अब ही तो रोकिये।

रोकिये नफरत की यह आंधी पर रोकिये ॥
यह सरय हाथों में लिये है आज भी तेजी छुट्टी ॥
फल हो पाये न अब इन्सान, बढ़कर रोकिये ॥
है यहां मंदिर, वहां मस्जिद, वहां पर कल्पगाढ़ ॥
फैके मिट्टने की तरफ रफतार, सककर रोकिये ॥
आह औरत की न फूटे और बच्चे की न नीम ॥

इस करोड़ों की कहानी को कहों पर रोकिये ॥
यह जमीं का ही लहू है इस तरह बहने न दो ॥
आसमां सुनतां नहीं इसको जमीं पर रोकिये ॥
प्रस्तुतः प्रकाशचन्द्र बोहरा, बाड़मेर
श्री परमार धत्रिय जैन मेवा समाप्त
पावारट-२८५३६८ (गुजरात)

શ્રી જૈન આત્માનંદ સભાના શતાબ્દી વર્ષની ઉજવણી નિમીતે
સંસ્કૃત વિદ્યાર્થીઓનું સન્માન સંસ્કૃત

સ
સ
સ
સ
સ
સ

સ
સ
સ
સ
સ



શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા દ્વારા શતાબ્દી વર્ષની ઉજવણી નિમીતે એસ. એસ. સી. પરીક્ષામાં સંસ્કૃત વિષયમાં ૮૦ ટકાથી વધારે માર્કસ મેળવનાર વિદ્યાર્થી લાઈ-ઝેનોને ઇનામે આપવાને તથા ડેલેજમાં અણુતા વિદ્યાર્થીઓને શિષ્યવૃત્તિ આપવાને સમાર્થતા. ૧૭-૯-૬૫ ને રવિવારે શ્રી આત્માનંદ સભામાં યોજવામાં આવેલ હતો. ઉપરોક્ત ઝોટામાં સંસ્કૃતમાં ૬૨ % માર્કસ મેળવનાર કુ. બાવીષા સ્થૂર્યકાન્ત વોરાને પ્રથમ ઇનામ રૂ. ૧૫૧/-નું સભાના પ્રમુખ શ્રી પ્રમોહાદી શાહ આપી રહ્યા છે. બાજુમાં ઉપપ્રમુખ શ્રી ચીમનનાઈ શેડ તથા સેકેટરી શ્રી દીયકાન્ત સલેલ બેઠેલા છે. કાર્યક્રમને સંક્ષણ બનાવવા માટે સેકેટરી શ્રી કાર્તિકાદી સલેલ તથા સ્કેલરશીપ ક્રમટીના સભ્યો શ્રી ચીમનલાલ વર્ધમાન તથા શ્રી જુપતરાય જ્યાતીલાલ શાહે સારી જહેમત ઉઠાયેલ હતી. સંસ્કૃત વિષય માટે કુલ ૨૪ ઇનામો આપવામાં આવેલ તથા ડેલેજમાં અણુતા ૧૬ વિદ્યાર્થીઓને શિષ્યવૃત્તિ આપવામાં આવેલ હતી....



જ્ઞાન પંચમી મહેસુલ

શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા તરફથી દર વર્ષ મુજબ આ વર્ષે સં. ૨૦૫૨ ના કારતક શુહ ૫ શનિવાર તા. ૨૮-૧૦-૬૫ ના રોજ સભાના લાઈએરી હોલમાં કલાત્મક જ્ઞાન ગોઠવામાં આવનાર છે, તો આવનગરમાં જિસાજમાન પરમ પૂજય આચાર્ય ભગવંતો તથા પરમ પૂજય મુનિ ભગવંતો તથા પરમ પૂજય સાંઘીજી મહારાજ સાહેબ તથા આવનગર જૈન મૂર્ત્ત્પુજક તપા. સંઘના દરેક ભાઈઓ તથા ઝેનોએ દર્શનાર્થી પદ્ધારવા ભાવભયું આપું રહ્યું છે.



ਸਤਕਮੰਗਲ ਬਨੋ....

मुखं पुण्योदयाधीनं,
दुःखं पापोदयोदभवम् ।
तस्मात् सदा सुखाकाङ्क्षी,
पुण्यकार्यपरो भवेत् ॥

५

* સુખ પુણ્યોહયથી છે અને હુઃખ પાપો-
હયથી.... માટે સતત સુખી રહેવાના
અભિલાષીએ સતત સતકમ્શીલ
રહેવું ધટે.

四

- * Happiness and misery are dependent upon the rise of merit and demerit respectively. So a person desirous of permanent happiness, should always be devoted to doing meritorious acts.

BOOK-POST

तंत्री : श्री प्रभादकान्त खीमयंद शाह

પ્રકાશક : શ્રી લૈન આમાનંદ સભા, ભાવનગર

મુદ્રક : સાધના મુદ્રણાલય, હાયાપીઠ પાછળ, ભાવનગર

४२८